International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं (कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास) में दलित चेतना"

(सोनिया देवी)

(सहायक प्रोफेसर गवर्नमेंट डिग्री कालेज आर एस पुरा)

हिन्दी दलित–साहित्य की शुरुआत काफी प्राचीन है। परन्तु इसका रूप आधुनिक काल में डा. अम्बेड़कर के काल से ही माना जाता है।

हिन्दी–साहित्य की अनेक विधाओं में दलित–चेतना विकसित होती हुई दिखाई देती है। जिसका उल्लेख इस प्रकार से किया जा सकता हैः–

1. कविता में दलित–चेतना

सर्वप्रथम साहित्य की उत्पत्ति कविता से हुई है। दलित–साहित्य का मूल भी कविता को ही माना गया है। दलित–साहित्य में दलितों ने अपने सुख–दुःख की घटनाओं को चित्रित किया है। हिन्दी दलित–साहित्य में 'हीराडोम' को पहला दलित कवि माना जाता है। 'अछूत की शिकायत' नामक भोजपुरी कविता में इन्होंने अछूत जीवन की मर्मिक वेदना को अभिव्यक्त किया है। उन्होंने इस कविता में भगवान से शिकायत की है कि भगवान अछूतों की रक्षा क्यों नहीं करता है?

"कँहया सुतल बारे सुनत न बाटे अब,

डोम जानि हमनी के हुए थे डेरइले।"[1]

इस तरह 'हीराडोम' ने ईश्वर की सत्ता को चुनौती दी है और साथ ही साथ

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रश्नचिन्ह भी लगाया है। हिन्दी के प्रमुख दलित कवि 'स्वामी अछूतानंद' (1928) भी सामाजिक रुढ़ियों का विरोध करते हुए दलितों में उनकी अस्मिता को जगाते हुए कहते हैं:–

''शुर्दो गुलाम रहते, सदियां गुजर गई हैं

जुल्मों सितम को सहते, सदियां गुजर गई हैं।''[2]

कवि बिहारीलाल हरित कवि होने के साथ–साथ एक अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता भी रहे थे। उन्होंने सन् '1946' में 'अछूतों का पैंगम्बर', 'अछूतों का बेताज़ बादशाह' आदि पुस्तकें भी लिखी हैं।

अनेक दलित कवियों ने अपने काव्य में सामाजिक रुढ़ियों के प्रति विद्रोह, वर्ण–व्यवस्था, दलित यथार्थवाद और दलित काव्यों में मानवता का चित्रण किया है। ''वास्तविक रूप में दलित कविता का मूल उद्धेश्य है मानव को ''जीओ और जीने दो' के सिद्धांत को अपनाना चाहिए।''[3]

अतः स्पष्ट है कि दलित कवियों का मुख्य उद्धेश्य दलित–समाज के मनुष्यों को समाज में सम्मान तथा बरावर का हक दिलवाना है।

2. उपन्यास में दलित–चेतना

हिन्दी उपन्यास का पहला युग प्रेमचन्द युग था। इस युग को नव जागरण का युग भी कहा जाता है। हिन्दी उपन्यासों में दलितों का चित्रण सबसे पहले प्रेमचन्द के साहित्य में दिखाई देता है। दलितों की समस्याओं को लेकर प्रेमचन्द के उपन्यासों में कई प्रसंग मिलते हैं। प्रेमचन्द ने 'प्रेमाश्रम' में दलितों की दयनीय

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्थिति का चित्रण किया है। और अपने 'रंगभूमि' उपन्यास में एक अन्धे और दलित भिखारी सूरदास को नायक बनाकर क्रांतिकारी कार्य किया है। उनका यही कार्य दलितों को सम्मान प्रदान करता है।

प्रेमचन्द ने 'गबन' में भी दलितों का चित्रण किया है। 'कर्मभूमि' में दलितों की अनेक समस्याओं को उठाया है। जैसेः– दलितों की मन्दिर में जाने की समस्या उनके शिक्षा के प्रबंध की समस्या, उनके खान–पान आदि।

प्रेमचन्द ने अपने अंतिम उपन्यास 'गोदान' में दलितों की समस्या को ही नहीं, बल्कि उनके आक्रोश को भी व्यक्त किया है। प्रेमचन्द के बाद 'निराला' ने भी अपने उपन्यास 'अलका' और 'चतुरी–चमार' उपन्यासों में दलितों की समस्याओं तथा उनके संघर्ष को दिखाने का प्रयास किया है।

3. नाटक में दलित–चेतना

साहित्य की जितनी भी विधाएँ हैं उनमें नाटक एक प्रभावपूर्ण विधा है। ''भारतीय रंगमंच को शुरुआत और स्त्रोत के रूप में रामायण और महाभारत जैसे जिन दो महाकाव्यों का सबसे बड़ा योगदान है। उनके रचयिता वाल्मीकि और व्यास दलित वर्ग से ही सम्बंधित थे।''[4] इन रचनाओं में चित्रित प्रमुख दलित पात्र जैसेः– शबरी, केवट, जटायु और बाद में राम की सेना में विभिन्न वर्गों के लोग और दूसरी तरफ एकलव्य यहाँ तक कि कर्ण जैसा महत्त्वपूर्ण चरित्र ये सारे पात्र आदिकाल से लेकर आजतक साहित्य की अलग विधाओं का विषय बनते रहे हैं।

आजादी के बाद नाटकों की दुनिया में काफी परिवर्तन हुए हैं। भीष्म–साहनी कहते हैंः– ''हम आजादी के बाद बंबई गये उन दिनों थिएटर (नाटक) बड़ा सक्रिय

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बना। सामाजिक और आर्थिक विसगतियों को मार्क्सवादी दृष्टि से देखने की कोशिश करते हुए उन्हें मंच पर लाया जाने लगा।''[5] हिन्दी दलित–साहित्य में अनेक दलितों का परिमार्जित रूप निखरने लगा। हिन्दी के कुछ दलितकारों की रचनाएं इस प्रकार से हैं:– मोहनदास नैमिशराय द्वारा लिखित 'हैलो काम रेड' का मंचन 3 जुलाई, गाँधी मेमोरियल हाल, प्यारे लाल भवन नई दिल्ली में हुआ। जिसमें यह बताया गया है– ''कि वर्तमान में विषय सामाजिक परिपेश में साँस लेने वाले जैसे लोगों की कहानी है। जो राजनैतिक रंगमंच पर कहते कुछ हैं और करते कुछ ओर हैं, जिनके दिल और दिमाग में अभी भी जाति–भेद भरा है।''[6]

इस प्रकार स्पष्ट है कि दलित नाटककारों ने अपने–अपने नाटकों के माध्यम से दलितों को जागरुक करने का प्रयास किया है।

4. कहानी में दलित–चेतना

कहानी की शुरुआत अगर देखा जाये तो मानव जन्म के थोड़े ही दिनों बाद शुरू हो जाती है। हर व्यक्ति का जीवन अपने आप में एक कहानी है। इसी सम्बंध में रमणिका–गुप्ता कहती है – ''कालान्तर में सभ्यता की यात्रा में मनुष्य खेमों में बंटने लगा। फिर खेमों में होड़ लगी, युद्ध हुए, जय–पराजय हुई। समानता तथा सामूहिकता खत्म होने पर वह किसी व्यक्ति का गुलाम और दास बना होगा, उसी दिन स्वामी का जन्म हुआ, शायत पहली दलित–कहानी भी उसी दिन घटी होगी।''[7]

निष्कर्ष:– भारत के प्राचीन काल के साहित्य को दलित–चेतना की दृष्टि से देखते हैं तो हम यह जान पाते हैं कि भारत एक ऐसा देश है जहाँ वर्णाश्रम को बहुत अधिक महत्ता दी गई है। और वर्णों को यथावत बनाये रखने की कोशिश भी

की गई है। आजादी के बाद संविधान में दलितों को पूर्ण अधिकार प्रदान किया गया। प्रगतिशील मानसिकता के उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में दलितों की समस्याएँ उनके संघर्ष को जोर–शोर से उठाना शुरू किया। और दलितों को केन्द्र में रखकर अनेक उपन्यास भी लिखे।

संदर्भ सूचीः–

1	मोहनदास नैमिशराय	''हिन्दी दलित–साहित्य'', पृष्ठ 39
2	मोहनदास नैमिशराय	''हिन्दी दलित साहित्य'', पृष्ठ 46
3	डा. सुरेश मारुतिराव मूले	''हिन्दी और मराठी दलित–साहित्य एक तुलनात्मक अध्ययन'', पृष्ठ 142
4	देवेन्द्र राज अंकुर	''भारतीय नाटय–साहित्य में दलित–चेतना'' पृष्ठ 49
5	मोहनदास नैमिशराय	''हिन्दी दलित साहित्य, साहित्य अकादमी'' पृष्ठ 223
6	मोहनदास नैमिशराय	''हिन्दी दलित–साहित्य, साहित्य अकादमी'' पृष्ठ 226
7	रमणिका गुप्ता	''दलित कहानी संचयन'' पृष्ठ 115